निष्कर्ष

एवं

उपसंहार

निष्कर्ष एवं उपसंहार

भारत में भक्ति-आन्दोलन का इतिहास अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। यद्यपि भक्ति की परिकल्पना वैदिक साहित्य के ग्रन्थों में बहुत पहले ही हो चुकी थी, तथापि इसका जनव्यापी आन्दोलन ईसा की छठवीं शताब्दी में आलवार गायकों द्वारा प्रारम्भ हुआ। उसके उपरान्त नाथ मुनि, यामुनाचार्य, रामानुजाचार्य, माध्वाचार्य आदि आचार्यों द्वारा प्रवर्तित होकर तथा ज्ञानेश्वर और नामदेव से पोषित होकर उत्तरभारत में रामानन्द, कबीर तथा सूरदास एवं तुलसीदास से पल्लवित एवं पुष्पित हुआ।

मध्ययुगीन सन्तों ने भक्ति को शास्त्रीय परिवेश से निकाल कर समाज के सामान्य से सामान्य स्तर पर लाने का प्रयत्न किया। इसका कारण यह था कि ये सन्त शास्त्रीय ज्ञान की अपेक्षा अनुभव-ज्ञान को अधिक महत्व देते थे। उनका विश्वास सन्तों के सत्संग में था और वे सन्तों की अनुभवगम्य विचारधारा में अवगाहन करना अधिक उचित और विश्वसनीय समझते थे। इसीलिए उन्होंने कर्मकाण्ड और बाह्याडम्बर का विरोध किया। तीर्थाटन, पूजा-पाठ तथा माला आदि को व्यर्थ सिद्ध किया। उनका ईश्वर एक है, वह निराकार, निर्विकार, अजन्मा और अरूप है। उसे मूर्ति और अवतार में सीमित नहीं किया जा सकता। भक्ति व्यक्तित्व बोध की अपेक्षा रखती है इसीलिए सन्तों ने इस निर्गुण, निराकार, सर्वव्यापी अनन्त ब्रह्म से मानसिक सम्बन्ध जोड़कर तथा विभिन्न प्रतीकों का माध्यम प्रयुक्त कर सामान्य जनता में उसके प्रति अनुरक्ति और भक्ति जाग्रत की।

स्वामी रामानन्द के शिष्यों-- पीपा, रैदास, धना और सैन तथा कबीर आदि ने जो अधिकांशत: निम्नवर्ग से ही सम्बन्धित थे तथा जिनका शास्त्रीय ज्ञान नहीं के बराबर था, जीवन की सहज और पवित्र अनुभूति के आधार पर ही समाज के निम्न से निम्न स्तर तक भक्ति का प्रचार करना चाहते थे। इस प्रकार इन सन्तों ने भक्ति को शास्त्रीय परिवेश से निकाल कर समाज के सामान्य से सामान्य स्तर तक प्रचारित किया।

सन्तों ने चेतावनी द्वारा संसार के वास्तविक रूप को व्यक्त किया तथा माया से विरक्त होने का उपदेश दिया। उनके अनुसार जो कुछ दृष्टिगत होता है, वह जगत है। इसका निर्माण निर्गुण निराकार ज्योतिरूप परब्रह्म से हो हुआ है। यह (जगत) चंचल है, गतिशील है, नश्वर है, तथा मिथ्या एवं स्वप्नवत् है। यह जगत् चार दिनों की चाँदनी है। दिन की हाट है, जो शाम होते ही उठ जाती है। अत: इस पर विश्वास करना आत्म-प्रवंचना है। इसीलिए सन्तों ने चेतावनी द्वारा संसार के वास्तविक रूप को प्रकट करते हुए इसे निस्सार सिद्ध किया है तथा माया से विरक्ति का उपदेश दिया है। यह माया भ्रमात्मक और मिथ्या है, जीवों को सत्पथ से हटाने वाली है। यह 'कनक' और कामिनी' पर आधारित है। सन्तों ने इसका मानवीकरण एक नारी के रूप में किया है, जो ठगिनी है, डाकिनी है, चोरटी है तथा डाँइनि है। इस डाँइनि के पंच-पुत्रों--काम, क्रोध, लोभ, मोह तथा तृष्णा के वशीभूत होकर मन सदैव विकारवान बना रहता है। इसीलिए सन्तों ने माया से बचने का उपदेश दिया है।

इन सन्तों ने कथा का आश्रय न लेते हुए भगवान की विभूति का विस्तृत विवेचन किया है, जब कि इनके परवर्ती सूरदास तथा तुलसीदास ने कथा के आधार पर ही अपने इष्टदेव का गुण-गान किया है। सन्त-कवियों के अनुसार ब्रह्म के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान समष्टि-परक न होकर व्यक्ति

व्यष्टि परक साधना पर आधारित है । यह ज्ञान प्रत्येक व्यक्ति को अपनी साधना तथा आत्म-चिन्तन से प्राप्त हो सकता है । कबीर का कथन है कि अपने मन ही मन स्वयं विचार करते रहने से सत्य का प्रकाश हो उठता है-- कहीं आने जाने की आवश्यकता नहीं पड़ती और न किसी कथा का ही आश्रय ग्रहण करना पड़ता है । तात्पर्य यह कि आत्म-चिन्तन के ही आधार पर सन्तों ने भगवान के वास्तविक स्वरूप को जाना, पहचाना तथा उनकी विभूति का विस्तृत विवेचन किया ।

ईश्वर के वास्तविक स्वरूप का निर्धारण हो जाने पर और उसके सही रूप का ज्ञान हो जाने पर उसकी उपलब्धि के लिए सन्तों ने 'आन्तरिक-पवित्रता' को महत्वपूर्ण कहा । जब तक हृदय का कल्मष दूर नहीं होता, हृदय,संसार की विषय-वासनाओं से मुक्त होकर पवित्र नहीं होता तब तक वह ईश्वरानुभूति के योग्य नहीं हो पाता । जिस प्रकार बिना धोये,मैले कपड़े पर किसी प्रकार का रंग नहीं चढ़ सकता,उसी प्रकार मन को बिना निर्मल किए ईश्वर-भक्ति का रंग नहीं चढ़ सकता । इसीलिए सन्तों ने मन को चुनरी (कपड़ा) तथा सद्गुरु को रंगरेज कहा है । इस प्रकार अन्तःकरण पवित्र हो जाने पर सन्तों ने ईश्वर के साथ मानसिक सम्बन्ध जोड़कर भक्ति प्रारम्भ की । जिसकी उत्पत्ति उनकी 'भाव-भक्ति' के माध्यम से ही समझी जा सकती है । इसमें भक्ति की भावना का उद्भव हृदय से होता है । 'भाव-भक्ति' के बिना इस भव-सागर से मुक्त होना असम्भव है,इसीलिए सन्तों ने वाह्याडम्बर को छोड़कर भावनामयी अनुभूति ही का प्रचार किया, जो भक्ति के क्षेत्र में उनकी महत्वपूर्ण देन है ।

इस आन्तरिक पवित्रता तथा मानसिक भक्ति का ज्ञान तब तक नहीं होता,जब तक कि गुरु का मार्ग दर्शन न प्राप्त हो । गुरु के उपदेश से ही यह ज्ञात होता है कि उदारता,शील,क्षमा,सन्तोष,धीरज,दीनता,दया विचार, विवेक ग्रहणीय हैं तथा क्रोध,लोभ,कपट,तृष्णा,कनक और कामिनी

निन्दा, मांसाहार, तीर्थव्रत आदि अग्रहणीय हैं । बिना गुरु के ज्ञान अधूरा है । ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सन्मार्ग की ओर वही अग्रसर कराता है । ब्रह्म का ज्ञान उसी के द्वारा होता है, इसलिए वह ब्रह्म से भी ऊंचा है । इसप्रकार सन्तों ने गुरु की महत्ता सर्वोपरि स्वीकार की ।

सन्तों ने भक्ति और जीवन को समानान्तर मान कर ही आचरण करने को कहा । उनके अनुसार जिस भक्ति के लिए जीवन की स्वाभाविक और सात्त्विक गति एवं यति में परिवर्तन करना पड़े वह धर्म नहीं है जीवन की सहज और पवित्र अनुभूति द्वारा सम्भावित भक्ति ही वास्तव में भक्ति है और वही श्रेयष्कर भी है ।

अन्त में सन्तों ने सांस्कृतिक दृष्टि से जो सर्व प्रमुख कार्य किया वह था 'जन भाषा में काव्य की सम्भावना' । गूढ़ से गूढ़ तथा जटिल से जटिल धार्मिक सिद्धान्त-- जिनकी केवल शास्त्रीय व्याख्या ही सम्भव थी ,जो केवल पंडितों और विद्वानों के विचार-सम्पत्ति बने रहते थे उन्हें सन्तों ने अत्यन्त सहज सुबोध शैली में व्यक्त कर बोधगम्य बना दिया । उन्होंने जीवन के चिरन्तन सत्य को अत्यन्त सरल सुबोध तथा अलंकार विहीन भाषा में व्यक्त किया है, जिसमें वाटिका-सौन्दर्य नहीं, वनराजि की प्रकृति-श्री है । तात्पर्य यह कि सामान्य जनता तक अपने भावों को पहुंचाने के लिए उन्होंने सरल, अकृत्रिम तथा वाग्याडम्बर विहीन भाषा को ही अभिव्यक्ति का माध्यम बनाया, जिसे समझने के लिए पुस्तक ज्ञान की इ उतनी आवश्यकता नहीं, जितनी वास्तविक अनुभूति की है । सर्वसाधारण की भाषा में व्यक्त होकर ही भक्ति एक आन्दोलन का रूप ले सकी और उसका प्रसार उत्तर भारत के जन-जन के हृदय में सम्भव हो सका । यही भक्ति-युगीन आन्दोलन में सन्तों का योगदान है ।

-o-

परिशिष्ट

(क) भक्ति के विविध रूपों का तुलनात्मक रेखाचित्र

सन्तों ने निराकार ब्रह्म की भक्ति को ही महत्व दिया है। अतः नवधा भक्ति में पादसेवन, अर्चन, वन्दन, दास्य का निराकरण किया है। उसके स्थान पर उन्होंने भाव-भगति को स्थान दिया है।

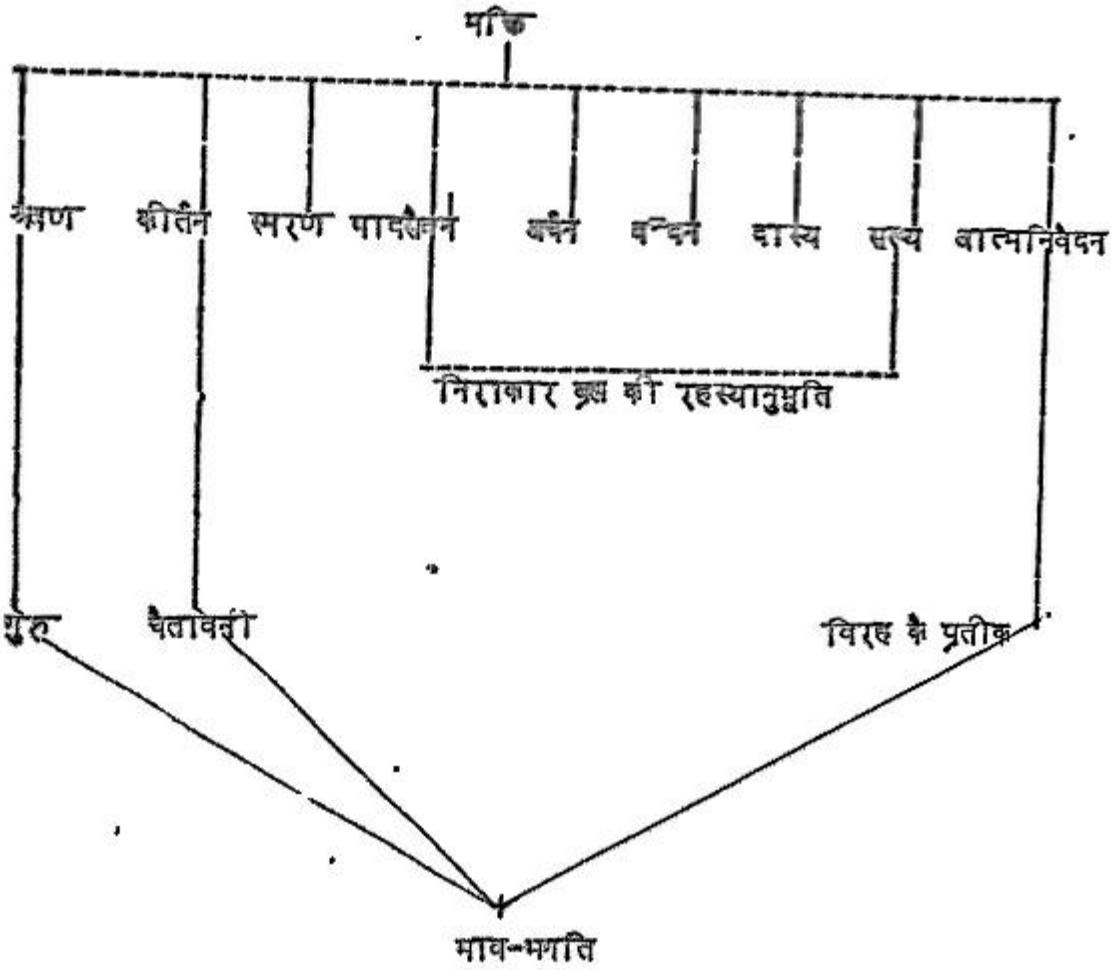

(ख) भक्ति काव्य के कुछ उदाहरण

१- ज्यों तिल मांही तेल है, ज्यों चकमक में आगि ।
तेरा सांई तुझमें, जागि सकै तो जागि ॥
२- जैसे काठ में अगिन है, फूल में है ज्यों बास ।
हरिजन में हरि रहत हैं, ऐसे पल्टू दास ॥ (पल्टूदास)
३- जैसे मोती ओस का तैसो यह संसार ।
विनसि जाय छिन एक में, दया प्रभु उरधार ॥ (दयाबाई)
४- प्रेम तो ऐसा कीजिए, जैसे चन्द चकोर ।
घींच टूटि भुइं या परै, चितवै वाही ओर ॥ (कबीरदास)
५- मिंहदी में लाली रहै, दूध माहि घिव होय ।
पल्टू तैसे संत हैं, हरिबिन रहै न कोय ॥ (पल्टूदास)
६- सुन्दर मछरी नीर में, विचरत अपने ख्याल ।
बगुला लेत उठाइके, त्यौंहिं ग्रसै यौं काल ॥ (सुन्दरदास)
७- जो ऊगै सो अत्थवै, फूलै सो कुम्हिलाय ।
जो चुनिए सो ढहि परै, जामै सो मरि जाय ॥ (कबीर)
८- बड़ा भया तो क्या भया, जैसे पेड़ खजूर ।
पंछी को छाया नहीं, फल लागै अति दूर ॥ (कबीर)
९- मेरा मुझ में कुछ नहीं, जो कुछ है सो तेरा ।
तेरा तुझको सौंपते, क्या लागै है मेरा ॥ (कबीर)
१०- साध पुरुष देखी कहै सुनी कहै नहिं कोय ।
कानों सुनी सो झूठ सब, देखी सांची होय ॥ (दरिया साहब)
११- पल्टू यहि संसार में, कोउ नाहीं हीत ।
सोऊ बैरी होत हैं, जाको दीजै प्रीत ॥ (पल्टूसाहब)
१२- तन भी तेरा मन भी तेरा, तेरा प्यंड पराण ।
सबं कुछ तेरा, तू है मेरा, यह दादू का ज्ञान ॥ (दादूदयाल)

(ग) सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

(संस्कृत, हिन्दी, उर्दू)

(१) अथर्ववेद

(२) अष्टाध्यायी -- महर्षि पाणिनि

(३) अष्ट छाप और वल्लभसम्प्रदाय -- डा० दीनदयाल गुप्त

(४) अम्बु सागर श्री लक्ष्मी वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस बम्बई सं०२००६ ।

(५) अलबैरुनी

(६) आदि ग्रन्थ -- रविदास

(७) आर्षेय ब्राह्मण

(८) आदि ग्रन्थ -- कबीर

(९) आदि ग्रन्थ -- गुरुनानक

(१०) आदि ग्रन्थ --(आदि श्री गुर ग्रन्थ साहेब जी)-श्री मोहनसिंह वैद्य

(११) आत्म-बोध -- श्री लक्ष्मी वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस, बम्बई, सं०२००६ ।

(१२) आलवार कलकालनिलै -- श्री एम०राघव अय्यंगार

(१३) आलवार कलअरुलमौली --स्वामी चिदम्बरनार

(१४) ईशोपनिषद्

(१५) कठोपनिषद्

(१६) कल्याण --भक्ति अंक, साधनांक

(१७) कबीर -- डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी

(१८) कबीर ग्रन्थावली --(सम्पादक) डा० श्यामसुन्दरदास

(१९) कबीर वचनावली --(सम्पादक) हरिऔध

(२०) कबीर का रहस्यवाद -- डा० रामकुमार वर्मा

(२१) कबीर साहित्य की परख -- आचार्य परशुराम चतुर्वेदी

(२२) कबीर की विचारधारा -- गोविन्द त्रिगुणायत

(२३) कबीर शब्दावली -- वेलविडियर प्रेस, प्रयाग

(२४) कबीर पंथी शब्दावली -- श्री वर्मा वेंकटेश्वर स्टीम प्रेस बम्बई,सं०२००६
(२५) कबीर बीजक -- टीका-विचारदास
(२६) कबीर: एक विवेचन -- डा० सरनाम सिंह
(२७) कबीर दर्शन -- डा० रामजीलाल 'सहायक' ।
(२८) कवितावली -- गोस्वामी तुलसीदास
(२९) कुल्लियात-ए- खुसरो ।
(३०) गुरु परम्परा प्रभावम् -- (गुरु परम्परा ग्रन्थ)
(३१) गोपथ ब्राह्मण
(३२) गोरखबानी -- डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल
(३३) गोरक्ष शतक
(३४) गीता रहस्य -- लोक बालगंगाधर तिलक
(३५) छान्दोग्य उपनिषद्
(३६) जायसी ग्रन्थावली --संपा० आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
(३७) जैन दर्शन -- षट् दर्शन समुच्चय)
(३८) ढोला मारू रा दूहा
(३९) तैत्तिरीयोपनिषद्
(४०) तुलसी ग्रन्थावली -- काशी नागरी प्रचारिणी,सभा वाराणसी
(४१) दोहावली --तुलसीदास
(४२) दादू दयाल की बानी -- बेलविडियर प्रेस,इलाहाबाद
(४३) द्राविड़ मुनिवरकल -- श्री राधाकृष्ण पिल्लै
(४४) दिव्यसूरि चरितम -- गुरुपरम्परा ग्रन्थ
(४५) नया साहित्य : नए प्रश्न -- आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी
(४६) निरुक्त शास्त्र
(४७) नारद भक्ति सूत्र
(४८) न्याय परिशुद्धि -- श्री वेदान्तदेशिकाचार्य
(४९)नालायिर दिव्य प्रबन्धम् -- सं० एस०कृष्णमाचारी

(५०) नाच्चियार तिरुमोळी -- आण्डाल

(५१) नाथ सम्प्रदाय -- डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी

(५२) नाथपंथी साहित्य (निबन्ध) -- डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी

(५३) नाथ सिद्धों की बानियां -- डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल तथा डा० हजारी प्रसाद द्विवेदी ।

(५४) निर्णयसार -- श्री पूरण साहब

(५५) नाथमुनि : हिज लाइफ एण्ड टाइम्स -- आर० रामानुजाचार्य

(५६) परम्परा तथा प्रयोग का दर्शन -- डा० सत्येन्द्र

(५७) पलटू साहब की बानी -- सन्त पलटूदास

(५८) पेरियतिरुमुडियडैव }
(५९) प्रपन्नामृत } --(गुरु परम्परा ग्रन्थ)

(६०) पद्मावत -- मलिक मुहम्मद जायसी

(६१) पातंजल योग दर्शनम् -- महर्षि पातंजलि

(६२) पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास-- डा० अवधबिहारी पाण्डेय

(६३) विनय पत्रिका -- तुलसीदास

(६४) बृहदारण्यकोपनिषद्

(६५) वैष्णव धर्म -- आचार्य परशुराम चतुर्वेदी

(६६) वाल्मीकि रामायण -- महर्षि वाल्मीकि

(६७) ब्रह्म निरूपणम् --कबीर आश्रम जामनगर,सौराष्ट्र टीकाकार- प्रकाशमणि ।

(६८) ब्रह्मसूत्र -- शांभा०१।१।१

(६९) भारतीय संस्कृति -- डा० देवराज

(७०) भारतीय दर्शन -- पं० बलदेव उपाध्याय

(७१) भारतीय लोकनीति और सभ्यता --श्रीकृष्ण व्यंकटेश पुणताम्बेकर

(७२) भक्त माल -- नाभादास

(७३) भारतीय संस्कृति और उसका इतिहास-- सत्यकेतु विद्यालंकार

(७४) भक्ति सार -- श्री शैल(वेदान्त केशरी)
(७५) मैत्र्युपनिषद्
(७६) मुण्डकोपनिषद्
(७७) मुदल तिरुवन्तादि -- पोयगै आलवार
(७८) मुवर अरिय मोली विलक्कु -- श्री पी०श्री० आचार्य
(७९) मूंट्राम तिरुवन्तादि -- पेयालवार
(८०) मच्छीन्द्र गोरखबोध
(८१) मध्यकालीन सन्त साहित्य -- डा० रामकैलावन पाण्डेय
(८२) मूल निर्णय सार -- श्री पूरण साहब(बुरहानपुर)
(८३) मलूकदास जी की बानी -- वैलवेडियर प्रेस, इलाहाबाद
(८४) मानुषेर धर्म -- रवीन्द्रनाथ ठाकुर
अनुवा०रघुराज गुप्त
(८५) महाभारत -- वर्ण पर्व
(८६) यजुर्वेद
(८७) यतीन्द्र प्रवण प्रभावम् -- (गुरु परम्परा ग्रन्थ)
(८८) योग प्रदीप -- श्री अरविन्द
अनु० श्री लक्ष्मीनारायण गर्दे
(८९) ऋग्वेद
(९०) रामचरितमानस -- तुलसीदास
(९१) रामानुजाचार्य दिव्यचरितम् -- (गुरुपरम्परा ग्रन्थ)
(९२) राधावल्लभ सम्प्रदाय : सिद्धांत और साहित्य-- डा० विजयेन्द्र स्नातक
(९३) शतपथब्राह्मण
(९४) श्वेताश्वतरोपनिषद्
(९५) शाण्डिल्य भक्ति सूत्र
(९६) शिव संहिता
(९७) शुद्धाद्वैत मार्तण्ड
(९८) गुरु ग्रन्थ साहिब -- गुरु नानक

(९९) श्रीमद्भागवत -- महर्षि वेदव्यास

(१००) श्रीमद्भगवद्गीता -- गीता प्रेस प्रकाशन

(१०१) श्रीमद्भगवद्गीता -- तिलक प्रकाशन

(१०२) श्री कबीर परिचय -- गुरु दयाल साहब(बुरहानपुर)

(१०३) श्री मुकुन्दमाला -- श्री के०रामपिशारठी

(१०४) सामवेद

(१०५) सर्वदर्शन संग्रह

(१०६) साहित्य शास्त्र --डा०रामकुमार वर्मा

(१०७) सन्त कबीर --डा०रामकुमार वर्मा

(१०८) संस्कृति का दार्शनिक विवेचन --डा० देवराज

(१०९) संस्कृति के चार अध्याय --श्री रामधारी सिंह दिनकर

(११०) सूरसागर -- सूरदास
संपा०आचार्य नन्ददुलारे वाजपेयी
सम्पा० डा०धीरेन्द्र वर्मा

(१११) सूरसागर सार

(११२) संत मत का सरभंग सम्प्रदाय -- श्रीधर्मेन्द्र ब्रह्मचारी

(११३) संत सुधासार -- स्वामी सुन्दरदास

(११४) संत सुधासार -- नानकदेव

(११५) संत सुधासार -- स्वामी दादूदयाल

(११६) सन्त काव्य --सम्पा० आचार्य परशुराम चतुर्वेदी

(११७) सुन्दरविलास -- स्वामी सुन्दरदास

(११८) सन्त रविदास और उनका काव्य -- रामानन्द शास्त्री

(११९) सन्त बानी संग्रह -- बुल्ला साहब

(१२०) सन्त बानी संग्रह -- मलूकदास

(१२१) सन्त साहित्य -- डा० प्रेमनारायण शुक्ल

(१२२) सुन्दर ग्रन्थावली -- सन्त सुन्दरदास

(१२३) सन्त सुधासार -- वियोगी हरि

(१२४) सिद्ध साहित्य --डा० धर्मवीर भारती

(१२५) हिन्दुओं का जीवन दर्शन --सर्वपल्ली राधाकृष्णन
अनुवा०-श्रीकृष्ण किंकर सिंह
(१२६) हिन्दी साहित्य(द्वितीय भाग) -- सन्त काव्य (निबन्ध)
-- डा० रामकुमार वर्मा
(१२७) हिन्दी और कन्नड में भक्ति आन्दोलन का तुलनात्मक अध्ययन-डा०हिरण्यमय
(१२८) हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास --डा०रामकुमार वर्मा
(१२९) हिन्दी साहित्य की भूमिका -- डा० हजारीप्रसाद द्विवेदी
(१३०) हिन्दी काव्य में निर्गुण सम्प्रदाय -- डा० पीताम्बरदत्त बड़थ्वाल
(१३१) हिन्दी अनुशीलन -- डा०धीरेन्द्र वर्मा विशेषांक
(१३२) हिन्दी सन्त साहित्य -- डा० त्रिलोकीनारायण दीक्षित
(१३३) हठयोग प्रदापिका
(१३४) ज्ञान समुद्र

अंग्रेजी ग्रन्थ

१३५- अर्ली हिस्ट्री आफ वैष्णविज्म इन साउथ इण्डिया

१३६- अर्ली तमिल रेलिजस लिटरेचर इन इण्डियन हिस्टोरिकल क्वार्टर्ली- वाल्युम - १८ ।

१३७- इपीग्राफिका इण्डिया -- वाल्युम --४

१३८- एन आउटलाइन आफ द रेलिजस लिट्रेचर आफ इण्डिया-- कुर्बुहर ।

१३९- एन इन्साइक्लोपीडिया आफ रेलिजन्स एण्ड एथिक्स ।

१४०- एलियट,भाग२ -- जामिउल हिकायत ।

१४१- काणेज हिस्ट्री आफ धर्मशास्त्र-- प्रो० काणे ।

१४२- ग्रेन्स आफ गोल्ड -- आर०एस० वेंकिटन ।

१४३- तमिल स्टडीज ।

१४४- दि पीपुल आफ इण्डिया -- सरहर्बर्ट रिजले ।

१४५- दि हिस्ट्री आफ श्री वैष्णवाज -- टी०ए० गोपीनाथराव ।

१४६- दि डेट आफ मध्वाचार्य -- बी०एन०कृष्णमूर्ति ।

१४७- वैष्णविज्म शैविज्म एण्ड अदर माइनर रेलिजस सैक्ट्स--डा०आर०जी० मण्डारकर ।

१४८- बाइग्राफी आफ कबीर -- डा० रामकुमार वर्मा (प्रेस में)

१४९- मिडिवल इण्डिया -- डा० ईश्वरी प्रसाद ।

१५०- लाइफ एण्ड द कण्डीशन आफ द पीपुल आफ़ द हिन्दुस्तान -- कुंवर मुहम्मद अशरफ ।

१५१- हिस्ट्री आफ तमिल लिट्रेचर -- प्रो० ई०एस०वरदराज ऐय्यर ।

१५२- हिस्ट्री आफ श्री वैष्णवाज -- श्री टी०ए०गोपीनाथ राव ।

१५३- हिस्ट्री आफ तमिल लांग्वेज एण्ड लिटरेचर -- प्रो०एस०वैय्यापुरी पिल्लई ।

१५४- हिस्ट्री आफ इण्डियन फिलासफी --डा०एस०एन०दास गुप्ता ।

-o-